कु० ११५
Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कुरान पर एक दृष्टि

८५

नन्दकुमार अवस्थी

श्री प्रभाकर साहित्यालोक—लखनऊ

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मूल्य ।=)

माडर्न प्रिंटर्स धर्मशालारोड, चारबाग लखनऊ ।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

कुरान पर एक दृष्टि

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सर्वशक्तिमान, सारे संसार का स्वामी, सृजन-पालन-संहार का एकमात्र अधिकारी, जगदीश्वर, परमेश्वर अथवा खुदा एक ही है, यह आस्तिक जगत में सबको मान्य है। उसी प्रकार जीव और ईश्वर के सम्बन्ध तथा एक प्राणी का दूसरे से सम्बन्ध समझते हुए भगवत्प्राप्ति अथवा परम शांति तक पहुँचने के लिये कुछ मूल सिद्धांत भी हैं, जिन पर किसी को मतभेद नहीं। उपासना (पूजा का ढंग) भले ही देश-काल-पात्र के अनुसार एक दूसरे से कुछ अलग हो परन्तु उन मूल सिद्धांतों की साधना को धर्म सब मानते हैं। इसलिये ईश्वर के समान ही मानव-धर्म भी एक है, अनेक नहीं। फिर भी सारा मानव-समूह समय-समय पर और एक ही समय में अनेक धर्मों में बटा हुआ दिखाई देता है। हम यह समझने लगते हैं कि धर्म अनेक हैं और प्रत्येक धर्म का विकल्पित ईश्वर दूसरे धर्म के ईश्वर से भिन्न तथा अपने समर्थकों का पक्षपाती और दूसरे धर्मावलम्बियों का शत्रु है। इस भ्रांति में फँसकर एक ही सृष्टिकर्ता की रचना और एक ही मूल पुरुष (आदम) की संतानें धर्म के नाम पर परस्पर एक दूसरे के प्रति कैसे २ अत्याचार करती रही हैं, सारा इतिहास इसका साक्षी है।

परम शान्ति के पथ से भटक कर, लुभावने सांसारी जीवन में फँसे हम लोग अपने अपने स्वार्थ और पिपासा की तृप्ति के लिए धर्म के नाम पर जाने या अनजाने अनेक छोटे-बड़े गुटों में बँट कर छिन्न-भिन्न हो गये। दार्शनिक वर्ड्सवर्थ ने कहा है "जगत्पिता की परमानन्द-दायिनी प्रकृति के सर्वसुलभ सुखों को छोड़कर मनुष्य ने नाना प्रकार के अपने ही रचे हुये बंधनों में अपने आपको जकड़कर कितना दुखी कर लिया। हाय, मानव ने मानव को किस दुर्गति में पहुँचा दिया है।" राग और द्वेष में फँसा, अहंकार की मूर्ति तथा अपने को ही कर्ता-धर्ता मानने वाला आसुरी मनुष्य किसी भी विगत जननायक, महात्मा अथवा पैगम्बर के नाम पर उसी की शिक्षाओं के प्रतिकूल अनाचार में प्रवृत्त हो जाता है। और इसी अनाचार एवं दुराचार से जब लोक काँप उठता है तब गीता और कुरान के अनुसार, गुनाह (पाप) और कुफ्र (नास्तिकता) को मिटाने और सही

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
मार्ग को दिखाने के लिये ईश्वर कृपा से किसी महान शक्ति, ईश्वरदूत, वली, पैगम्बर अथवा जननायक का अवतार होता है।

उदाहरणस्वरूप आज से लगभग १४०० वर्ष पूर्व, अरब मरुस्थल और उसके आस-पास के भूखण्ड में, रूढ़िवादिता के नाम पर चल रहे दम्भ, पाखण्ड, अनाचार और व्यभिचार से त्रस्त जनता को, अज्ञान के अन्धकार से निकालकर सत्य अथवा ज्ञान के प्रकाश में लाने के निमित्त ईश्वर की अनुकम्पा से मुहम्मद जैसा महात्मा और कुरान जैसा ज्ञान अवतरित हुआ। परन्तु धर्म से केवल अपना स्वार्थ साधन करने वाले अरब मठाधीशों, राजनैतिक और सामाजिक सामन्तों और उनके चंगुल में फँसी हुई रूढ़ि और परम्परा की शिकार, त्रस्त और कराहती हुई भ्रांत जनता तक ने उस अपौरुषेय क्रांति का घोर विरोध किया। फिर भी हज़रत मुहम्मद और उनके अनुयायी अनेक अत्याचार और संकटों को झेलकर अपने सर्वस्व बलिदान द्वारा ईश्वर कृपा से जनकल्याण करने में सफल हुए। उस भूखण्ड में अधर्म का नाश हुआ और धर्म की पुन: स्थापना हुई।

अस्तु, उस क्रांति को सफल बनाने वाली, ईश्वरीय ज्ञान और सत्य का भण्डार, तत्कालीन राजनैतिक और सामाजिक दुरवस्था से छुटकारा दिलाने वाली और एक ही परमपिता परमेश्वर में अखण्ड विश्वास उत्पन्न कराने वाली पुनीत पुस्तक कुरान में क्या है? उस कुरान को मुसलमान अब किस रूप में समझते हैं, विशेषकर भारतीय मुस्लिम और मुस्लिमेतर बन्धु? नीचे पंक्तियों में कुछ चर्चा इसी संबन्ध में है।

अरब भूखण्ड की प्राचीन झलक

अरब का अर्थ ही मरुभूमि है। एशिया के दक्षिण-पश्चिम, यह रेगिस्तान-प्रधान देश भी अति प्राचीन काल में आद, समूद जैसी उन्नत जातियों के अधिकार में सभ्यता के शिखर पर आसीन था। इस सूखे प्रदेश में उपजाऊ घाटियां और हरे भरे स्थल भी हैं। अरब के आस-पास का देश और अफ्रीका में मिस्र और अबीसीनिया (हबश) तक यहाँ के धर्म आचार और सभ्यता का प्राय: सदैव प्रभाव रहा। ईसा से हजार डेढ़ हजार वर्ष पूर्व, इन प्राचीन और परम उन्नतिशील जातियों के काव्य, कला और

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कौशल के उत्कर्ष की साक्षी, उस समय की प्रचलित सैकड़ों किंवदंतियाँ और तत्कालीन इमारतों के ध्वसावशेष आज भी विद्यमान है।

कुरान अवतरण क्यों ?

कुरान की आयतों से स्पष्ट है—"परमेश्वर की कृपा से संसार के सभी भूखण्डों मे ईश्वर-दूत (अथवा जननायक) अवतरित होते हैं, और उनके द्वारा सत्य और ज्ञान का प्रकाश होता है। जातियाँ और गिरोह सन्मार्ग पर चल कर समुन्नत होते हैं, और वही जातियाँ और गिरोह कालान्तर में उन्नति की चकाचौंध, स्वार्थ एवं अहंकार में भटक कर अधर्म के मार्ग में फँसे ईश्वर के कोप से नष्ट होते हैं। फिर उनके स्थान पर नवीन समूह नये जननायकों के राह बताने पर ईश्वर कृपा से सुख और समृद्धि प्राप्त करते हैं। ईश्वर एक है, भले ही उसे भिन्न भिन्न नामों से पुकारा जाय। सभी अवतार, वली या पैगम्बर आदर के पात्र हैं और उनके द्वारा प्राप्त सत्य और ज्ञान सब की संपत्ति है।" धर्म-ग्रन्थ कुरान में ऐसे अनेक महापुरुषों की चर्चा आई है और अनेक की चर्चा नहीं भी आई जो अन्यत्र हुए हैं। वे सब धर्मशिक्षक और धर्मग्रन्थ एक दूसरे के विपरीति नहीं वरन् एक दूसरे के समर्थक और प्रतिपादक हैं। कुरान का ज्ञान जो ईश्वरीय ज्ञान है किसी एक पोथी में अथवा एक भाषा तथा जन-समुदाय के लिये सीमित नहीं। ईश्वरदूत हजरत मुहम्मद द्वारा अरबी भाषा में कुरान इसलिय अवतरित हुआ कि उस भाषा के भाषी और उस भूखण्ड के निवासी अपनी उस समय की धर्म विपरीत दशा को त्याग कर ईश्वर और ईश्वरीय मार्ग को पहचानें। कुरान की आयतें हजरत मुहम्मद के पास ज्ञान के प्रकाश स्वरूप उदय होती थीं, न कि किसी किताब की शक्ल में। इसीलिये लिखा है कि कुरान 'लौह महफूज' अर्थात लोहे की पाटी में सुरक्षित है अर्थात कोई भूले या भटके वह ज्ञान सर्वकालीन और चिरस्थायी है। कुरानकाल से पूर्व अवतरित, तौरेत, ज़बूर और इञ्जील आदि धर्म-पुस्तकों और इब्राहीम, हूद सालेह, लूत, शुऐब, दाऊद, मूसा, ईसा आदि पैगम्बरों का कुरान समर्थन करती है। इन धर्म-ग्रन्थों और महापुरुषों के अनुयायी उनके उपदेशों को त्याग कर एक मनगढ़न्त औ

O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Ko

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अपने स्वार्थ में ढाले हुये आचरण को धर्म मानकर उनके नाम पर चलते थे। ऐसा प्राय: सभी देशों, काल और धर्मों में देखने को मिलेगा। आज मुसलमान भी इस दुर्बलता के शिकार होने से बचे नहीं हैं और न दूसरे ही मतावलम्बी। अस्तु, आज से प्राय: १४०० वर्ष पूर्व अरब की इसी शोचनीय स्थिति से छुटकारा दिलाने के लिये कुरान और मुहम्मद का जन्म हुआ।

मुहम्मदकालीन प्रचलित मत-मतान्तर

कुरान में जिन उपदेशों पर बार बार और विशेष जोर दिया गया है, उससे तत्कालीन धार्मिक और सामाजिक पतन का पूरा पता लगता है। स्थल-स्थल पर विभिन्न गिरोह शासन करते थे। स्वेच्छाचारी महन्त, धर्माधीशों और सामन्तों का बोलबाला था। इन मनमाने मतमतांतरों में भी प्रधानत: चार समूहों का उल्लेख मिलता है। ईसाई, यहूदी, मंजूसी (अग्नि उपासक) और मुश्रिक। मुश्रिक से तात्पर्य उन लोगों से है जो उपासना में ईश्वर के साथ साथ अन्य महापुरुषों, देवी-देवताओं, तथा मूर्तियों को भी शरीक (शिर्क) करते हैं। अरब के प्रधान नगर मक्का की प्रबल और प्रधान जाति कुरैश प्राय: मुश्रिक ही थे। अग्नि उपासक भी मुश्रिकों की श्रेणी में लाये जा सकते हैं। यहूदी और ईसाई क्रमश: तौरेत और इंजील धर्म-पुस्तकों और हजरत मूसा और ईसा के अनुयायी थे। वह भी एक ईश्वरवाद के समर्थक थे और कुरान उनका समर्थन करती थी। किन्तु जो दैनिक आचार इन लोगों का उस समय था वह स्वयं इनकी धर्म-पुस्तकों के प्रतिकूल था। उदाहरण के लिये देखिये। तौरेत के अनुसार शनिश्चर को मछली का शिकार वर्जित था। यहूदियों को सप्ताह के इस एक दिन में भी मछली का अभाव खटकने लगा। वे शुक्रवार को गड्ढे खोद कर खाड़ियों से जल उनमें भर लेते। शनिश्चर को उस जल की मछलियाँ पकड़ कर खाते और कहते कि यह शिकार तो धर्मानुसार शुक्रवार को ही कर लिया गया था। इसी प्रकार ईसाई एकमात्र ईश्वर की उपासना न कर ईसा को भी ईश्वर का पुत्र मानकर पूजने लगे। यही नहीं, यहूदी और ईसाई एक ही प्रकार की धर्म-शिक्षा मानते हुये भी यह कहते थे कि मूसा और ईसा

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ईश्वर से सिफ़ारिश करके अपने अपने अनुयायियों के पापों की क्षमा प्राप्त करवा देगें ; इस प्रकार अन्य धर्मावलम्बियों की अपेक्षा नर्क से बच जायेंगे। मुश्रिक तो नाना प्रकार को देव-मूर्तियों की उपासना में ही मस्त थे। मक्का के प्रधान मन्दिर काबा में ही ३६० मूर्तियां थीं। इन सब में 'हुब्ल' देवप्रधान थे। मुश्रिक तो मूर्ति-पूजा में ऐसा उलझे कि परमात्मा को भूल ही गये। उन मूर्तियों को अपने उचित और अनुचित सभी सुखों को प्राप्त कराने वाला समझ कर उन्हीं में लिपट गये। हां, धार्मिक दृष्टि से दो वर्ग और थे। एक साइबी, जो सभी मतों को अच्छी बातों को मानते थे और किसी धर्म के विरोधी न थे। दूसरे मुनाफ़िक अर्थात् वह धूर्त जो किसी न किसी धर्म का अनुयायी अपने को बताते हुये भी कोई भी धर्माचरण न करते थे और कुमार्ग और भ्रांति की ही बातें सदैव करते थे। उदाहरण के लिये जो अधिक दान देता उसके लिये कहते कि पाखंडी है और धन का वैभव दिखाता है और यदि कोई धनहीन भी दान न देता तो उसे कहते कि कैसा स्वार्थी और मक्खीचूस अथवा अभागा है। मुसलमान होते हुये भी यह मुनाफ़िक (वञ्चक) निन्दनीय हैं।

मुहम्मदकालीन सामाजिक स्थिति

क़ुरान काल और उससे पूर्व, सामाजिक आचरण उच्छृंखलता (मनमानी) की चरम सीमा पर पहुँच चुका था। क्या यहूदी और ईसाई आदि अद्वैतवादी और क्या मुश्रिक जैसे द्वैतवादी, सब, अपने अपने प्राचीन शुद्ध धार्मिक सिद्धांतों को तोड़ मरोड़कर अपने स्वार्थों के अनुकूल बनाये चल रहे थे। पूजन, बलिदान, उपासना सब कुछ अपनी श्रेष्ठता और दूसरों को तिरस्कृत करने के भाव से होती थी, सब में आसुरी भाव का समावेश था। गीता का कथन है—आढ्योऽभि जनवानस्मि कोऽन्योस्ति सदृशोमया। यक्ष्ये दास्यामि मोदिष्य इत्यज्ञान विमोहिता:" अर्थात् "मैं बड़ा धनवान और बड़े कुटुम्ब वाला हूँ। मेरे समान दूसरा कौन है। मैं यज्ञ करूँगा, दान दूंगा, हर्ष को प्राप्त होऊँगा, इस प्रकार के अज्ञान से मोहित हैं" यही सब ओर चरितार्थ था। शराब, सूदखोरी, महन्ती, सामंती, व्यभिचार, अप्राकृतिक व्यभिचार, स्त्रियों को पशुवत हीन समझना, लड़की-

O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Ko

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

लड़कों में भेद, कन्याओं का वध, घटतौली, दूसरे धर्मों के प्रति असहिष्णुता, गुलामों के साथ अमानुषिक व्यवहार तथा पैगम्बरों और धर्मगुरुओं एवं संतों का कत्ल समाज में चारो ओर हो रहा था। अरब की पुरानी सभ्यता और कला कौशल नष्ट हो चुका था। विचरते हुए बद्दुओं का सा जीवन था। पिता की स्त्रियों को पिता के मरने के बाद पुत्र आपस में दायभाग के समान बाँटकर अपनी स्त्रियाँ बना लेते थे। यह सब कुरान तथा तत्कालीन उपलब्ध अन्य साहित्य से प्रगट है। इन्हीं बातों का खण्डन, इन अपराधों के लिये कठोर दण्ड और विश्व के सभी धर्मों को मान्य सदाचार और सन्मार्ग की पुनर्स्थापना ही कुरान का अभीष्ट था।

हज़रत मुहम्मद

क्रूरता, नृशंसता और स्वेच्छाचार में सराबोर अरब के इसी अज्ञानकाल के विक्रमीय संवत् ६१७ ईस्वी ५६० (हर्षवर्धन काल) में मक्का के प्रसिद्ध कुरैश वंश के हाशिम परिवार में मुहम्मद का जन्म हुआ। इनकी माता का नाम आमना और पिता का अब्दुल्ला था। इनके पिता इनके गर्भकाल में ही स्वर्गवासी हुये। माता धनहीन थीं और शायद मुहम्मद के स्वावलम्बी होने के लिये ही ईश्वर प्रेरणा से ५ वर्ष की अवस्था में वह माता से भी वंचित हो गये। ८ वर्ष की अवस्था में इनके एकमात्र स्नेही और अभिभावक पितामह (बाबा) भी संसार से चल बसे। अब इनका भार इनके चाचा अबूतालिब पर आ पड़ा। अबूतालिब के स्नेहमय संरक्षण में पशुओं को चराते खेलते कूदते उनका स्वच्छन्द बाल्यकाल बीता। युवावस्था में ही उनको अनेक ईसाई सन्तों का समागम प्राप्त हुआ जिसके फलस्वरूप, काबा में स्थित मूर्तिपूजा के विकृत स्वरूप ने उनके मन को अधिक विद्रोही होने में सहायता दी।

सदाचारी मुहम्मद धर्म और नीति दोनों में कुशल थे। सत्य और धर्म की स्थापना और रक्षा के हेतु नीति को अपनाना वह उचित मानते थे। उदाहरण के लिये रमज़ान के माह में युद्ध मना था। किन्तु यदि शत्रु उस समय आक्रमण करें तो उनके साथ उस समय युद्ध अनुचित नहीं। यदि शत्रु की आशंका हो तो नमाज़ (प्रार्थना) के अवसर पर भी हथियारबंद

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

रहना चाहिये। अस्तु, उन्होंने उस समय मक्का में प्रचलित रूढ़ि और पाखण्डवाद के विरुद्ध आवाज उठाई। कोई देश और कोई काल क्यों न हो 'बाप-दादा के चल रहे धर्म, पर आस्था होना स्वाभाविक है। कोई यह नहीं सोचता कि बाप-दादों की श्रृंखला, जब से सृष्टि चल रही है जोड़ी जाय तो गिनी नहीं जा सकती। उन बाप-दादों ने समय समय पर कितनी भिन्न-भिन्न मान्यतायें मानीं और उनमें कितने सुर-असुर सभी होते रहे, इसका विचार कोई नहीं करता। अस्तु उसी बाप-दादा से प्राप्त तत्कालीन पाखण्डवाद और दुराचार में ग्रस्त कुरैश वंश, युवक मुहम्मद के खण्डनात्मक तर्कों से कुपित हो, उसे कष्ट देने लगा। छिपते, भागते फिर भी अपने मार्ग पर दृढ मुहम्मद धीरे धीरे लोगों को अपने मतानुकूल बनाते रहे। आरम्भ में तो यह हाल था कि वह अपने प्रकार की (इस्लाम के अनुसार) नमाज भी खुलकर नहीं पढ़ सकते थे। इनके निज के परिवार के लोग इनके चचा अबुजहल आदि इनके परम शत्रु बन बैठे और इनके वध का भी यत्न करने लगे। हाँ, इनके संरक्षक और चचा अबूतालिब, जो कहा जाता है मुसलमान तो अन्त तक न हुए, परन्तु इनके सदैव सहायक रहे।

विचारों में समुन्नत और क्रांतिकारी होते हुये भी मुहम्मद पढ़े-लिखे न थे। ईश्वर कृपा और सत्संग से ४० वर्ष की अवस्था में उन्हें 'जिब्राइल' फरिश्ता (देवदूत) के दर्शन हुए और तब से उन्हें कुरान की आयतों का ज्ञान प्रगट होता रहा। यहीं से उनकी पैगम्बरी आरम्भ हुई। यह ज्ञान-पद 'आयतें' कहलाती हैं। मुहम्मद ने इन आयतों को मक्का के प्रतिष्ठित मन्दिर के धर्माचार्यों और जनता, सभी को सुनाना-समझाना आरम्भ किया। अबूबकर (इस्लाम के पहले खलीफा) हजरत अली (मुहम्मद साहब के दामाद) तथा कुछ और जोरदार व्यक्ति इनके अनुयायी हो चुके थे। इनका बल कुछ बढ़ता देख कुरैश सरदारों को अपनी प्रतिष्ठा और स्वार्थ की हानि का भय हुआ। उन्होंने इस्लाम के अनुयायियों पर असहनीय अत्याचार आरम्भ कर दिये जिससे भयभीत हो वे मुहम्मद साहब की आज्ञा से अरब छोड़ छोड़ कर अफ्रीका के हबश प्रदेश में जा बसने लगे।

O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Ko

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

इसी बीच इनके शक्तिशाली चचा अबूतालिब का भी देहान्त हो गया। कुरैशों को रहा सहा भय भी जाता रहा। उन्होंने एक दिन इनकी हत्या का षड्यन्त्र रच डाला। किन्तु ईश्वर कृपा से पूर्व ही सूचना मिल जाने के कारण ५३ वर्ष की अवस्था में वे मक्का से मदीना नगर को चुपचाप प्रस्थान कर गये। इस मक्का-प्रस्थान को हिजरत कहते हैं, और उसी काल से हिजरी सम्वत् का आरम्भ माना जाता है।

मुहम्मद साहब इस्लाम के अन्तिम प्रवर्तक (खातिमुन्नबी) माने जाते है। रसूलेखुदा, पैगम्बर, नबी आदि श्रेष्ठ और परम श्रद्धासूचक सम्बोधनों से उन्हें पुकार कर मुस्लिम धर्मावलम्बी अपने को गौरवान्वित समझते हैं। आरम्भ ही से उनके अनुयायी और सहयोगी सहाबाई कहलाते हैं और मदीना आने पर जिन लोगों ने उनके लिये और इस्लाम के लिये आत्म-समर्पण किया वे अन्सार (सहायक) कहलाते हैं। दोनों ही का स्थान पवित्र और श्रेष्ठ था परन्तु कभी कभी अपने अपने दृष्टिकोण से एक दूसरे से अधिक प्रधानता के अधिकारी समझने की होड़ में फंस जाते थे।

इस्लाम धर्मावलम्बियों के लिये तो कुरान सर्वस्व है ही परन्तु धर्म, नीति, समाज, न्याय, आचार आदि की सर्वतोन्मुखी शिक्षा देने वाला यह पवित्र ग्रन्थ इस्लमेतर बन्धुओं के लिये भी माननीय और आदरणीय है। प्रत्येक आयत का किसी न किसी घटना, व्यक्ति अथवा उस समय की वर्तमान किसी एतिहासिक तथ्य से सम्बन्ध अवश्य है। बिना उसको समझे और ध्यान में रखे, आयत के अर्थ को समझने जानने में भ्रम की सदैव आशंका है।

कुरान की आयतों और सूरतों का संकलन और वर्गीकरण मुहम्मद साहब के बाद इस्लाम के खलीफा तथा अन्य प्रमुख सहाबा व अन्सारों के सहयोग से हुआ, और उसी संग्रह को हम सब आज कुरान के रूप में मानते हैं।

मदीना आने के बाद इस्लाम में दीक्षित लोगों की संख्या तो बहुत बढ़ने लगी फिर भी रसूल का जीवन शान्तिमय न रहा। मुसलमान और काफिरों में बराबर युद्ध चलते रहे, मुश्रिकों और यहूदियों से विशेषकर। मक्का-विजय और वहाँ के प्रतिष्ठित देवल काबा की मूर्तियों को ध्वंस करने के बाद

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

से मुश्रिकों का बल तो टूट ही गया था। बाद में जो युद्ध हुये, वे प्रायः यहूदियों ईसाइयों और फ़ारस के अग्निपूजकों से हुये।

मक्का-विजय के बाद भी मुहम्मद साहब मदीना में ही निवास करते रहे। वहीं ६३ वर्ष की आयु में अपने मिशन को पूरा कर मुसलमानों को बिछोह में डाल वे संसार से बिदा हो गये। उनकी मृत्यु के बाद वही हुआ जो संसार में सर्वत्र और सदैव होता आया है। सादा जीवन और उच्च विचार का आचरण क्षीण पड़ने लगा। कुरान की ही व्यवस्था को त्याग कर लोग ख़िलाफ़त के नाम पर बादशाहत के सुख भोगने लगे। इस्लाम के नाम पर वही सब काम होने लगे जो उसमें वर्जित हैं। राजसी पोशाक, महल, दास-दासी, रत्न आभूषण, साम्राज्य को बढ़ाने के लिये बड़े २ युद्ध, बरबस धर्म-परिवर्तन और कत्लेआम सभी कुछ अपनी आत्म पपासा के लिये होने लगा। यही सब देख-पढ़ कर जो मुसलमान नहीं हैं वह समझने लगे कि कुरान की शिक्षा कदाचिद् यही है; और मुसलमान स्वयं भी यही समझने लगे कि कुरान की शिक्षा यही है, इसी के अनुकरण से धर्म का पालन होगा। इतना ही नहीं, इस्लाम के नाम पर इस्लाम विपरीत आचरण ने ही मुसलमानों में उस गृह-युद्ध को जन्म दिया जिससे स्वयं उनका समुदाय सदैव के लिये छिन्न-भिन्न हो गया। इसकी बहुत कुछ जिम्मेदारी कुरैश गोत्र के ही उमैया वंश पर थी जिसका बीज इस्लाम के तीसरे खलीफ़ा हजरत उस्मान के समय पड़ा और हज़रत मुआविया के समय से फलने फूलने लगा।

कुरान

परन्तु 'कुरान' कुरान ही है। वह अति पवित्र है। किसी की शत्रु नहीं, सबकी सखा, सबको हितकर। थोड़ा परिचय नीचे दिया जाता है।

कुरान की आयतों का अभ्युदय महात्मा मुहम्मद के द्वारा उनकी चालीस वर्ष की अवस्था में रमज़ान के पुनीत मास से आरम्भ होकर मरण पर्यन्त होता रहा। यह ३० खण्डों (पारों) और ११४ सूरतों (अध्यायों) में सम्पूर्ण होती है। प्रत्येक सूरत (अध्याय) में कई-कई रुकूअ (विराम विशेष) हैं और प्रत्येक रुकूअ में अनेक आयतें (ज्ञान वाक्य) हैं। जो

O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Ko

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सूरतें मक्का में नाज़िल (अवतरित) हुईं वह मक्की और जो मदीना में अवतरित हुईं वह मदनी कहलाती हैं। सूरतों का विभाग किसी विशेष प्रसंग अथवा विषय को लेकर नहीं है। प्राय: 'अनेक विषय और कथानक मिले-जुले से स्थल-स्थल पर वर्णित हैं। एकही चर्चा बार बार भी आई है।

"आयतों की भाषा अरबी है, इसलिये कि इस ज्ञान का अवतरण उस समय अरब निवासियों के उद्धार के लिये ही हुआ था।" भाषा गद्य होते हुये भी अनुप्रासों की भरमार से अत्यन्त ललित और आकर्षक है। उदाहरण के लिये देखिये—"वन्नाज़िआति ग़रक़न् (१)+वन्नाशिताति नश्तन् (२)+वस्साबिहातिसब्हन् (३)+फ़स्साबिक़ाति सब्क़न् (४)+फ़ल् मुदब्बिराति अम्रन् (५)।" ईश्वरीय ज्ञान महात्मा मुहम्मद के हृदय में समय-समय पर जब उदय होता तो इसी को 'आयत' अथवा 'वही' का उतरना कहते हैं।

कुरान के अनुसार एक ईश्वर ही सृष्टि की उत्पत्ति, पालन और संहार करने वाला है। सर्वत्र निराकार स्वरूप का प्रतिपादन है। कहीं कहीं साकार जैसा भी वर्णन प्राप्त है जैसे "ईश्वर सृष्टि रचना करने के उपरांत अर्श पर जा विराजा" "फरिश्ते अर्श को उठाये हैं" आदि। परन्तु वस्तुत: बारबार यही शिक्षा आई है जिससे प्रभावित होकर, मनुष्य किसी प्रकार की भी साकार उपासना न करके ईश्वर विमुख होने के कुफ्र से बचा रहे।

'इस्लाम' के अर्थ यह नहीं कि केवल १४०० वर्ष पूर्व हज़रत मुहम्मद द्वारा कोई नवीन मत अथवा धर्म की स्थापना हुई थी। आदि से चले आ रहे मानव धर्म, ससार के विभिन्न देश और काल में अवतरित धर्मग्रन्थ और आप्त पुरुषों द्वारा प्रदर्शित, बहुत समय पूर्व हज़रत इब्राहीम और सर्वोपरि मूलपुरुष हज़रत आदम का मान्य और भगवद्प्राप्ति का एक मात्र मार्ग ही 'इस्लाम-धर्म है, भले ही वह किसी नाम से पुकारा जाय। कुरान का कथन है कि पहले एक ही जाति और धर्म था। बाद में लोगों के भटकने पर समय-समय पर महापुरुष और धर्मग्रंथ पथ प्रदर्शन के लिये आते रहे, और पुन: इन्हीं के अनुयायी भ्रान्तिवश अपने अपने को पृथक-

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पृथक धर्म का अनुयायी कहने लगे। ईश्वर को सर्वांग आत्मसमर्पण ही वास्तविक सनातन धर्म है जिसका कौरानिक इस्लाम निर्देश करता है।

कुरान के अनुसार यह भी पुष्ट है कि मूल और अपरिवर्तनशील धर्म के अतिरिक्त दैनिक व्यवहार देश-काल-पात्र के भेद से आवश्यकतानुसार बदलते रहते हैं। मुहम्मद साहब की पैग़म्बरी पर आक्षेप करते हुये तत्-कालीन धर्माचार्य कहते थे कि ईश्वर-दूत भला मनुष्य ही के समान सोता खाता है? उसे तो अलौकिक होना चाहिये। इस पर कुरान का कथन है कि नहीं, पैग़म्बर भी तुम मनुष्यों के ही समान होता है, सांसारिक धर्मों में वह भी सकल जनों के समान ही बंधा है। वह तो भगवत्प्रेरणा से अलौ-किक ज्ञान का जगत में प्रकाश करता और भूले हुओं को राह बताता है। धर्म प्रदर्शन के लिए ईश्वर प्रेरित महान पुरुष मृत्यु पश्चात् अपने अनुयायियों द्वारा उपास्य देव अथवा ईश्वरत्व का साम्राज्य भोगने लगते हैं। जनता कभी इस भ्रान्ति में न पड़े इसलिये 'मुहम्मद केवल प्रेरित मात्र हैं, ईश्वर अथवा उसके साथ में पूजा-उपासना के अधिकारी नहीं' इस पर बहुत ज़ोर दिया गया है।

कुरान में नारी का स्थान

समाज की जननी और निर्माता नारियों की दशा उस समय अरब में अति दयनीय थी। वह केवल विलास और सेवा की सामग्री समझी जाती थीं। उन्हें पुरुषों की बात का उत्तर तक देने का अधिकार न था। एक साथ अनेक पत्नियाँ रखना, यहां तक कि पिता के मरने पर अन्य सम्पत्ति के समान उसकी स्त्रियाँ भी पुत्रों में बाँट ली जाती थीं। ऐसी विपरीत दशा में स्त्रियों के लिए सम्पत्ति में उत्तराधिकार, तलाक, मेहर (विवाह में पत्नी को दिया जानेवाला दहेज़) और निकाह आदि के नियम और संयम कुरान में एक महान क्रान्ति के परिचायक हैं। अपनी निकाह की हुई पत्नी के अतिरिक्त किसी भी स्त्री के साथ व्यभिचार उतना ही निषिद्ध और दण्डनीय था जितना स्त्री के लिए दुश्चरित्रा होना। कुरान का कथन है। "स्त्री अथवा पुरुष जो भी व्यभिचार का दोषी हो उसे १०० कोड़े की

O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Ko

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
सजा दी जाय। उनकी इस सज़ा पर लोग तरस न खाँय बल्कि उस अवसर पर तमाशा देखने एकत्र हों ताकि वह लज्जा जनक दृश्य दूसरों को शिक्षाप्रद हो।"

मूर्ति पूजा

मूर्तिपूजा का कुरान में सर्वोपरि विरोध है। कुफ़् (नास्तिकता) का यह सबसे बड़ा लक्षण है। मूर्तिपूजा का जो विकृत स्वरूप उस समय अरबमें फैला था उस गढ़े से समाज को निकालने के लिये यह आवश्यक था। स्वामी रामकृष्ण परमहंस की माता काली की आराधना द्वारा भगवान् में तन्मयता और तल्लीनता को सामने रखकर साकार उपासना के शुद्ध स्वरूप से भले ही कुरान के प्रेरक को विरोध न हो फिर भी अपवाद को छोड़कर प्राय: यही भय संभव है कि भगवल्लीनता के स्थान पर मनुष्य भगवद्विमुख हो कालान्तर में ध्यान के इस साधन से अपने को विभिन्न वर्गों में बाटने और मानव के द्वारा मानव के शोषण में लग जाय। इसलिए परिष्कृत से परिष्कृत स्वरूप में भी मूर्ति पूजा अथवा व्यक्ति पूजा कुरान को ग्राह्य नहीं।

'इख़्लास'

लोग मानें या न मानें, 'इख़्लास' इस्लाम का सार है। ज़रा गीता के सन्यास और योग के समन्वय की झलक देखिये। 'इख़्लास' मस्तिष्क की उस स्थिति का द्योतक है जब वह फल की कोई आशा न रखते हुये निष्काम भगवदर्पण कर्म करते हुये मनसा वाचा कर्मणा आत्मा को परमात्मा में लीन कर दे। स्वर्ग और मोक्ष तक की कामना 'इख़्लास' में बाधक है (तफ़सीर कबीर)। "इख़्लास के साथ मेरा ही भजन करनेवाला मुझे सबसे पहले प्राप्त करेगा।" "मानवमात्र की सेवा ही प्रधान कर्म है" "किसी का अधिकार छीनने वाला ईश्वर के एकत्व में कभी विश्वास नहीं करता।" 'जेहाद' भी इसी निष्काम और निस्संग कर्म का ही स्वरूप है। "अपने को भूलकर, अपने स्वार्थों को त्यागकर, धर्म मार्ग (पर सेवा) में कर्म करते-करते बलिदान होजाना।" इस प्रकार भगवदर्पण करने वाला ही मुस्लिम है। यही इस्लाम है। यही इब्राहीम आदि का आचरित सनातन धर्म है।

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

फ़रिश्ता-शैतान

कुरान में फरिश्तों और शैतान की चर्चा का बाहुल्य है। मनुष्य को कुमार्ग पर रोकने और प्रेरित करने वाली सद्बुद्धि और पापबुद्धि ही के यह प्रतिनिधि हैं। पवित्रता, सच्चरित्रता, व्रत-उपवास (रोज़ा), प्रार्थना (नमाज़), अनाथों की रक्षा, वृद्ध, स्त्रियों और अन्य धर्मों के आचार्यों के बध और उन पर अत्याचार का निषेध, बलिदान (कुर्बानी), खाद्य अखाद्य (हराम-हलाल), तीर्थ-यात्रा (हज्ज-उम्रा) प्रायश्चित्त (कफ़्फ़ारा), दान-पुण्य (ज़कात), शरणार्थियों (ज़िम्मी) की सुरक्षा, दासप्रथा का विरोध, भ्रातृभाव, समानता, अकारण हिंसा-जुआ-शराब-घटतौली का निरोध, स्त्रियों को दायभाग, रजस्वला काल में अस्पृश्यता, सृष्टि रचना, प्रलय (क़यामत), कृपणता और फ़िज़ूल ख़र्ची दोनों की समान निन्दा, स्वाध्याय, उपासना, अतिथि सत्कार आदि पंच महायज्ञों जैसे पुण्य कार्य, स्त्रियों का सम्मान, कन्याओं का बध तथा अनाथ धन-अपहरण का तिरस्कार—इस प्रकार सार्वभौम मान्य विधि और निषेध प्रकारान्तर से पुनीत कुरान में भी स्थल-स्थल पर जनमात्र को चेतावनी देते हैं।

काफ़िर

इस्लाम के साथ 'काफ़िर' शब्द भी एक दिलचस्पी की वस्तु है। क्या मुसलमान और क्या अन्य धर्मावलम्बी—जनसाधारण को इसको समझने में भ्रान्ति रहती है। काफ़िर के अर्थ हैं 'इन्कार करने वाला'। इस्लाम के अनुसार ईश्वर के एकत्व और सत्ता में अविश्वासी ही काफ़िर है। यदि यही अर्थ हैं तब तो किसी के मन को ठेस लगने की बात नहीं। एक विशेष अर्थवाची शब्द मात्र है, गाली नहीं। फिर भी कहनेवाला और जिसके लिये कहा जाय दोनों ही 'काफ़िर' शब्द को अपमानजनक समझते हैं। इसका कारण एक विशेष व्यवहार का लम्बा इतिहास है।

काफ़िर दो प्रकार के होते हैं। एक तो वह जो इस्लाम को स्वीकार न कर ईश्वर के एकत्व को नहीं मानते अथवा उसके अतिरिक्त अन्य देवों की उपासना (शिर्क) करते हैं। दूसरे वह काफ़िर जो न केवल यही करते

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Ko

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

वरन् मुसलमानों के धर्म में बाधा देकर उनके विरुद्ध युद्ध और अत्याचार करते, जैसा सामना मुसलमानों को आरम्भ में मक्का में हुआ था। इन दूसरे प्रकार के काफ़िरों के लिये ही कुरान में आया है, "जहाँ पाओ उनका बध करो। उनके नाश में उस समय तक प्रवृत्त रहो जब तक एक ईश्वर धर्म की स्थापना न हो जाय।" पहले प्रकार के काफ़िर कुरान में सह्य हैं। हज़रत मुहम्मद साहब के अभिभावक और चचा स्वयं अबूतालिब भी अन्त तक मुसलमान न होते हुए भी सदैव सबके श्रद्धा के पात्र रहे। मदीना प्रस्थान के आपत्तिकाल में मुश्रिकों की ही सहायता पैगम्बर को बराबर प्राप्त हुई थी।

मुश्रिक द्वैत उपासनावादियों को कहते हैं। सब मुश्रिक काफ़िर हैं किन्तु सब काफ़िर मुश्रिक नहीं। उदाहरण के लिये, एक नास्तिक काफ़िर है किन्तु मुश्रिक नहीं कहा जायगा। यहूदी और ईसाई ईसा आदि को पूजने लगने पर भी मुश्रिक नहीं कहे जा सकते। साधारणत: हिन्दू मुश्रिक समझा जाता है। प्रचलित मूर्तिपूजा पद्धति को देखते हुये इस्लाम के अनुसार वे काफ़िर या मुश्रिक हैं केवल इसलिए यह अर्थ नहीं कि उनका नाश अथवा जबरन उनका धर्म परिवर्तन इस्लाम को स्वीकार है। और वेदान्त दर्शन की भित्ति पर आधारित देवोपासना पर तो लान्छन कुरान की दृष्टि से भी नहीं आता।

तात्पर्य यह कि काफ़िर शब्द से मुस्लिम और अमुस्लिम जनता में उत्पन्न बहुत एक कोरी भ्रान्ति है। अपनी अपनी अवस्था के अनुसार, एक दूसरे के सहअस्तित्व का विचार करते हुये दोनों एक साथ मेल-जोल से रहें, यही कुरान का आदेश है। "पृथ्वी के प्रत्येक भाग में, प्रत्येक गिरोह में सदैव महापुरुष आ-आकर ईश्वर का मार्ग दिखलाते रहे हैं। वे सभी आदरणीय और मान्य हैं। उनमें भेद डालनेवाले काफ़िर हैं।" भले ही संसार में वे किसी भी नाम से पुकारे जाते हों। मुनाफ़िक (वंचक-धूर्त) की सबसे अधिक निन्दा है। उनकी सद्गति असम्भव है। चाहे वह किसी भी धर्म के नाम लेवा हों। काफ़िर के एक अर्थ यह भी है कि 'वह, जो

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

छिपाता है'। अर्थात् बाहरी रूप तो कुछ है, और उस आडम्बर के भीतर न जाने वह कितने राग द्वेष और अहंकार को छिपाता है। संसार भले ही न जाने परन्तु खुदा से वह छिपा नहीं। अपने असली रूप को छिपाने वाले भी उपरोक्त अर्थ से काफ़िर की संज्ञा में आते हैं। ऐसे काफ़िर संसार के प्रत्येक धर्म में दिखाई देंगे।

आईन (क़ानून)

आईन (न्याय) की भी कुरान में स्थान स्थान पर व्यवस्था है। स्त्रियों को सम्पत्ति में भाग, निकाह, तलाक आदि के नियम, व्यभिचार पर स्त्री-पुरुष को समान ही कठोर दण्ड, गवाहियों का विचार, चोरी, हत्या आदि पर नियम और दण्ड का विधान है। दण्ड अति कठोर हैं। उदाहरण के लिये—"चोर के हाथ काट डालो" "प्राण के बदले प्राण, आँख के बदले आँख और प्रत्येक अंग के बदले उसी अंग का बदला अपराधी को मिले।"

स्वर्ग-नरक

इस्लाम के मूल लक्ष्य निःस्वार्थ भगवल्लीनता के अतिरिक्त, सांसारिक सुखों की कामना करनेवालों को भी स्वर्ग का मार्ग है। स्वर्ग-नरक के भले बुरे चित्र कुरान में भी प्राप्त हैं। मरुस्थल के लिए सर्वप्रिय और दुर्लभ जल-पूरित नहरें और सदाबहार उद्यानों की पुण्यकर्मों के लिये बड़ी चर्चा है। क़यामत (प्रलय) में सबके कार्यों का लेखा-जोखा होगा। उसमें किसी प्रकार की दया अथवा सिफ़ारिश काम न देगी।

शोषित-शोषक

एक बात बड़े मार्के की है। सूरे हूद की २७वीं आयत में उल्लेख है कि मक्का के धर्म और कुलाभिमानी मुश्रिक मुहम्मद साहब का उपहास करते और कहते कि तुम्हारे सहायक तो केवल वही लोग हैं जो हम में नीच हैं। इस कथन में एक सर्वकालीन सत्य की झलक है। ससार में जब-जब भी कोई क्रांति और धर्म हुई अथवा सन्मार्ग की स्थापना हुई है तब-तब उस समय के मान्य धर्म और शक्ति के अधिकारी उस क्रान्तिदूत का विरोध और दमन

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

करते रहे हैं और नीच तथा शोषित वर्ग ही की सहायता से क्रान्ति सफल होती है। आसुरी प्रवृत्ति से आच्छन्न महान विद्वान और पराक्रमी ब्राह्मण-श्रेष्ठ रावण के विरुद्ध त्रस्त मुनियों तथा हेय वन्य जीवों द्वारा राम की सहायता, कैथेलिक साम्राज्यवाद से साधन हीन निहिलिस्टों और प्रोटेस्टेंटों का मोर्चा, संस्कृताभिमानी उन्मत्त पण्डितों द्वारा तुलसी के नागरी ग्रन्थ मानस के परिहास को झेलकर आज उसी तुलसी रामायण का अखिल भारत में साम्राज्य भोग और कल की बात है कि भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में किसान, मजदूर आदि शोषितों के बल द्वारा ही हमारे राष्ट्र नायकों की अपने संकल्प में प्रधान सहायता प्राप्ति भी इसी की पुष्टि करते हैं। भारत की केवल पार्थिव बेड़ियाँ ही नहीं टूटी वरन् इधर कई सदियों से चले आ रहे धना-निर्धन, ऊँच-नीच, स्पृश्य-अस्पृश्य तथा धर्म, पन्थ अथवा जातियों के नाम पर बँटे 'जीवस्य जीवाहार' में रत भारतीयों की आध्यात्मिक उन्नति का द्वार भी खुल रहा है।

अन्त में

इस समय विस्तार-भय से अधिक नहीं लिख रहे हैं। कुरान के एक निर्देश की ओर संकेत ज़रूरी है। "तुम्हारा किया तुम्हारे काम आवेगा, हमारा किया हमारे काम। एक का काम दूसरे की सहायता नहीं कर सकता।" इसलिये चाहे मुसलमानों के शिया, सुन्नी, कादियानी आदि विभिन्न फिर्कों में, और चाहे मुसलमान एवं अन्य धर्मावलम्बियों के बीच, जो भी परस्पर व्यवहार भूतकाल में रहा हो, उसमें बीते हुये इतिहास को सामने रखकर वैर-प्रीति न करना चाहिये। बीते हुये लोग आज नहीं हैं। उनके कर्म और कर्मफल भी उन्हीं के साथ गये। अब कुरान तथा सभी धर्म-ग्रन्थों की वास्तविक शिक्षा के अनुसार सद्भावना, सह-अस्तित्व और सर्व-कल्याण का मार्ग ही अपनाना सबको उपयुक्त है।

नन्दकुमार अवस्थी

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

विमल बंकिम सीरीज़

कमलाकांत का पोथा	२)	आनन्दमठ	२)
लोकरहस्य	२)	राधारानी	॥)
कपालकुण्डला	२)	राजसिंह	२)
युगलांगुरीय	॥)	बंगशार्दूल सीताराम	२)
विषवृक्ष	२)	इन्दिरा	२)
कृष्णकांतेर विल	२)	रजनी	२)
देवीचौधरानी	२)	मृणालिनी	२)
दुर्गेशनन्दिनी	२)	चन्द्रशेखर	२)

बाल प्रभाकर सीरीज़

१–हज़रत अबूबकर	।=)	५–चरट चौकड़ी	।–)
२–हज़रत उमर	।=)	६–महाराज कपालफोड़	।–)
३–हज़रत उस्मान	।=)	७–डायन राजरानी	।–)
४–हज़रत अली	।=)	८–मायावी सपेरा	।–)

रामकाकाकी कुटिया–छात्र संस्करण

यूरोपीय गुलाम व्यापार का रोमांचकारी चित्रण १॥)

भारतीय कृषि विज्ञान

प्रथम खंड २॥), द्वितीय खंड २॥), तृतीय खंड २॥)

रामायण कृत्तिवास बंगला

(बालकांड) का हिन्दी पद्यानुवाद मूल्य ३)

हमारा भोजन

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत मूल्य १॥)

प्राप्तिस्थान-- **श्री प्रभाकर साहित्यालोक,**

२३, श्रीराम रोड, लखनऊ

. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan K

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कुरान शरीफ हिन्दी में

१—विश्व के एक बड़े जन-समुदाय का सर्वमान्य ईश्वरीय धर्मग्रंथ। आज से १४०० वर्ष पूर्व अरब मरुस्थल की अपौरुषेय क्रांति, तत्कालीन समाज का जीता-जागता चित्र, रूढ़ि से सुधार का विकसन आदि, इस्लाम एवं इस्लामेतर बन्धु सभी के पढ़ने-देखने योग्य। अरबी कुरान का अविकल हिन्दी अनुवाद टिप्पणी सहित छप कर तैयार है। सजिल्द ग्रंथ का मूल्य ८) रु०

२—कुरान का एक पारा अम्म हिन्दी मूल मआकर अरबी के उच्चारण का नमूना देखिये। मूल ।=) सटीक ।।।)

अन्य इस्लामी पुस्तकें हिन्दी में:—

१—'कुरान पर एक दृष्टि' कुरान एवं कुरानकाल का सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक परिचय मूल्य । ।—) मात्र

२—जीवनचरित्र हज़रत अबूबकर ।=) हज़रत उमर ।=)
हज़रत उस्मान ।=) हज़रत अली ।=)

श्री प्रभाकर साहित्यालोक,

२२, श्रीराम रोड, लखनऊ

Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan I